२ भारत की विदेश नीति की विकास यात्रा

इस अध्याय में हम नया क्या सीखेंगे?

अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था, उसका स्वरूप और पिछली शताब्दी के शीतयुद्ध तथा उसके परिणाम आदि को समझ लेने के बाद अब हम उनसे संबंधित अन्य विषयों का परिचय प्राप्त करेंगे। इसके अनुसार विदेश नीति का अर्थ, उसे प्रभावित करने वाले घटक, साथ ही भारत की विदेश नीति के स्वरूप को जानेंगे।

विदेश नीति

अर्थ तथा महत्त्व : सभी देश अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के घटक होते हैं। उनमें से कोई भी राष्ट्र सभी अर्थों में स्वयंपूर्ण नहीं होता है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में परस्परावलंबन होता है यह हमारी समझ में आया है, किंतु यह परस्परावलंबन कुछ गिने-चुने देशों के लाभ अथवा हितों के लिए नहीं होना चाहिए। वह प्रत्येक राष्ट्र के हित के लिए हो; इसके लिए प्रयास करने पड़ते हैं। कौन-से राष्ट्र के साथ मित्रता करें, कौन-से गुट में शामिल हो या अंतरराष्ट्रीय राजनीति में कौन-सी भूमिका ले आदि के संबंध में प्रत्येक देश को निर्णय लेने पड़ते हैं। ऐसे निर्णय बहुत सोच समझकर लेने पड़ते हैं। इसी वैचारिक चौखट को विदेश नीति कहते हैं। प्रत्येक स्वतंत्र तथा प्रभुत्व संपन्न राष्ट्र अपनी-अपनी विदेश नीति निर्धारित करते हैं। इसलिए राष्ट्रों के विदेशी संबंधों का अध्ययन करने वाली अंतरराष्ट्रीय राजनीति में विदेश नीति को बहुत महत्त्व प्राप्त रहता है।

क्या आप जानते हैं ?

जब हमें किसी देश का अध्ययन करना होता है तो उस देश के संविधान और विदेश नीति को समझना आवश्यक होता है।

राष्ट्रीय हित संबंध : विदेश नीति से क्या तात्पर्य है; यह हमने संक्षेप में समझा। राष्ट्रीय हित और विदेश नीति का बहुत ही निकट का संबंध होता है। राष्ट्रीय हित संबंधों का संवर्धन विदेश नीति द्वारा किया जाता है। इसलिए विदेश नीति का विस्तृत अध्ययन करने से पूर्व हमें राष्ट्रीय हित संबंधों का अर्थ तथा उसका महत्त्व समझना चाहिए।

राष्ट्रीय हित संबंध से तात्पर्य अपने देश की स्वतंत्रता और प्रभुत्व संपन्नता को सुरक्षित रखने के लिए की जाने वाली उपाय योजना है। अपना आर्थिक विकास साधकर अपनी सामर्थ्य बढ़ाने के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों का भी राष्ट्रीय हित संबंधों में समावेश होता है। अपने राष्ट्र के लिए क्या लाभप्रद और उचित हैं; इसका विचार कर जब निर्णय लिए जाते हैं तब उसे राष्ट्रीय हित संबंधों का संवर्धन कहा जाता है। इस अर्थ में किसी भी राष्ट्र के राष्ट्रीय हित संबंधों में निम्न घटकों का समावेश होता है।

- अपने देश की स्वतंत्रता, प्रभुत्व संपन्नता तथा अखंडता की रक्षा करना अर्थात संरक्षण सर्वोच्च राष्ट्रीय हित है।
- आर्थिक विकास भी एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय हित है। आर्थिक दृष्टि से कमजोर राष्ट्र को अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करना भी कठिन होता है। इसलिए सुरक्षा के साथ-साथ आर्थिक विकास को भी महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय हित माना जाता है।

राष्ट्रीय हित संबंध और विदेश नीति : रक्षा और आर्थिक विकास के विषय राष्ट्रीय हित हैं। अतः उनका संवर्धन हो; इस दृष्टि से विदेश नीति बनाई जाती है। इसलिए राष्ट्रीय हित संबंध उद्देश्य माने जाते हैं तो विदेश नीति उन्हें प्राप्त

करने का साधन मानी जाती है। परिस्थिति और समय के अनुसार राष्ट्रीय उद्देश्यों में परिवर्तन होते रहते हैं। उसी के अनुसार राष्ट्रीय हित संबंधों में भी परिवर्तन होते रहते हैं। इन परिवर्तनों का प्रतिबिंब विदेशी नीति में दिखाई देता है। इसीलिए विदेश नीति प्रवाही होती है।

चलो, चर्चा करें ।

परिस्थिति और कालानुसार विदेश नीति में परिवर्तन होता है, फिर भी कुछ देशों की विदेश नीति कुछ शाश्वत मूल्यों पर आधारित होती है। जैसे, भारत की विदेश नीति अंतरराष्ट्रीय शांति, मानवाधिकार, सुरक्षितता इन मूल्यों पर आधारित है। उसे प्राप्त करने के लिए विदेश नीति में कौन-से प्रावधान होने चाहिए, ऐसा आपको लगता है?

विदेश नीति निश्चित करने वाले घटक: अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में किस राष्ट्र के साथ किस प्रकार के संबंध रखे जाएँ; यह विदेश नीति के आधार पर निर्धारित किया जाता है, परंतु विदेश नीति निर्धारण के समय अनेक घटकों का उसपर परिणाम होता है।

१. देश का भौगोलिक स्थान : आपने पृथ्वी का भूगोलक अर्थात ग्लोब देखा होगा अथवा विश्व का राजनैतिक मानचित्र देखा होगा। इसके आधार पर किसी भी राष्ट्र का भौगोलिक स्थान आपको दिखाई देता है। कुछ देश अन्य देशों से बहुत दूर हैं तो कुछ राष्ट्रों के आसपास कई पड़ोसी राष्ट्र हैं। कुछ राष्ट्रों को समुद्री तट प्राप्त हैं तो कुछ राष्ट्रों के पास भरपूर खनिज संसाधन है। संक्षेप में विदेश नीति निर्धारण करते समय देश का आकार, जनसंख्या, भूमि की गुणवत्ता, देश का समुद्री किनारा, प्राकृतिक संसाधन की उपलब्धता इन सभी बातों का विचार करना पड़ता है।

२. राजनैतिक व्यवस्था : लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में संसद को विदेश नीति के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। विदेश नीति संबंधी विषयों पर संसद में चर्चा होती है। विपक्ष प्रश्न पूछकर विदेश नीति पर नियंत्रण रख सकता है।

संघराज्य व्यवस्थावाले देशों को विदेश नीति निर्धारण करते समय घटक राज्यों का भी विचार करना पड़ता है क्योंकि पड़ोसी राष्ट्रों की गतिविधियों का घटक राज्यों पर प्रभाव पड़ता है, जैसे श्रीलंका की गतिविधियों का तमिलनाडु पर और बांग्लादेश की गतिविधियों का पश्चिम बंगाल और पूर्वोत्तर राज्यों पर परिणाम होता है।

ऐसा क्यों करना पड़ता है?

शांति एवं स्थिरता का जितना महत्त्व हमारे देश में होता है; उतना ही महत्त्व पड़ोसी देशों में भी होता है। इसीलिए पड़ोसी राष्ट्र में लोकतंत्र का निर्माण हो; इसके लिए भारत को प्रयास करने पड़ते हैं।

३. अर्थव्यवस्था : आधुनिक समय में किसी भी देश की आर्थिक स्थिति का विदेश नीति निर्धारित करने में बहुत महत्त्व प्राप्त हो गया है। सभी राष्ट्रों में आर्थिक विकास सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य बन गया है। इस कारण अर्थ व्यवस्था का विदेश नीति पर दो प्रकार से परिणाम होता है।

(१) देश की अर्थव्यवस्था मजबूत करने हेतु अन्य राष्ट्रों से प्रस्थापित किए जाने वाले आर्थिक संबंध, आयात-निर्यात, वैश्विक व्यापार में सहभाग आदि बातें विदेश नीति तय करती है।

(२) वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में आर्थिक सुरक्षा के मुद्दे राष्ट्रीय सुरक्षा की तरह महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। आर्थिक सुरक्षा जितनी मजबूत

क्या आप सहमत हैं ? सहमत हैं तो क्यों और सहमत नहीं हैं तो क्यों ? विस्तार से लिखिए।

राष्ट्र की आर्थिक सामर्थ्य बढ़ाने के लिए केवल गरीबी दूर करने पर बल न देते हुए संपत्ति और क्रय शक्ति बढ़ाने के प्रयत्न करने चाहिए।

होगी; राष्ट्र को उतने ही सामर्थ्यवान राष्ट्र की मान्यता मिलती है। मजबूत अर्थव्यवस्थावाले देश कम परावलंबी होते हैं तथा वे स्वतंत्रतापूर्वक विदेश नीति का निर्धारण कर सकते हैं।

४. राजनीतिक नेतृत्व : विदेश नीति निर्धारण में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, विदेशमंत्री, रक्षामंत्री,

सूची पूर्ण कीजिए ।

नीचे कुछ नेताओं के नाम तथा उनके द्‌वारा दिए गए योगदान के संबंध में जानकारी दी गई है, जैसे –

लालबहादुर शास्त्री : ताश्कंद समझौता

इस रूप में निम्न सूची पूर्ण कीजिए।

(अ) इंदिरा गांधी : .....

(ब) राजीव गांधी : .....

(क) अटलबिहारी वाजपेयी : .....

निम्नलिखित नीतियों का समर्थन करने वाले प्रधानमंत्री कौन हैं?

(अ) ..... पूर्व की ओर देखिए।

(ब) ..... अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत में निवेश बढ़ाने के प्रयत्न।

वित्तमंत्री, गृहमंत्री का सहयोग होता है। विदेश नीति की निरंतरता बनाए रखकर उसे सुधारने का प्रयत्न इन पदों के व्यक्ति करते हैं। जैसे पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षतावाद को बढ़ावा दिया। अटलबिहारी वाजपेयी ने भारत-चीन संबंध सुधारने में बड़ा योगदान दिया है।

५. प्रशासनिक घटक : विदेश नीति के निर्माण में विदेश मंत्रालय, विदेश सचिव, विदेशों में स्थित दूतावास, राजनैतिक अधिकारी आदि प्रशासनिक घटकों का समावेश होता है। यद्‌यपि विदेश नीति संबंधी अंतिम निर्णय प्रधानमंत्री तथा उनका मंत्रिमंडल लेता है फिर भी निर्णय तक पहुँचने

आप क्या करेंगे?

आप विदेश सचिव के पद पर काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री चीन की यात्रा करने वाले हैं। विदेश सचिव के रूप में विदेश मंत्रालय की ओर से आप प्रधानमंत्री को चर्चा के लिए कौन-से विषय सुझाएँगे?

के लिए प्रशासनिक व्यवस्था सहायता करती है। विदेश नीति के लिए आवश्यक जानकारी एकत्रित करना, उसका विश्लेषण करना, उसपर आधारित योग्य सलाह देना आदि काम प्रशासनिक अधिकारी करते हैं। उसी के साथ-साथ राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत की विदेश नीति

विदेश नीति संबंधी प्राथमिक जानकारी लेने के बाद अब हम भारत की विदेश नीति के संबंध में जानेंगे।

वर्ष १९४७ में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और तभी से भारत ने स्वतंत्र रूप से अपनी विदेश नीति निर्धारण की शुरुआत की। भारतीय संविधान के नीति निदेशक सिद्‌धांतों में शासन विदेश नीति को कैसे निर्धारित करें; इस विषय में प्रावधान किया गया है। नीति निदेशक सिद्‌धांतों में धारा ५१ के अनुसार विदेश नीति की एक व्यापक चौखट स्पष्ट की गई है। उसके अनुसार भारत अंतरराष्ट्रीय शांति तथा सुरक्षा को प्रधानता दे, अपनी अंतरराष्ट्रीय समस्या अथवा विवाद

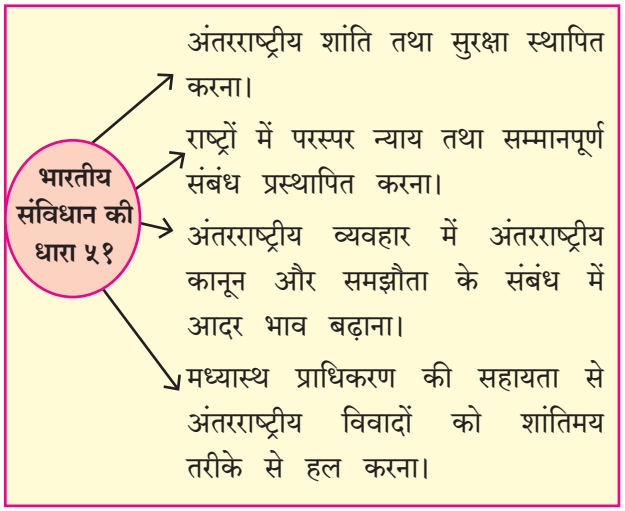

शांति के मार्ग से हल करे। अन्य राष्ट्रों से मित्रतापूर्ण संबंध रखे तथा अंतरराष्ट्रीय कानून का आदर करे, यह भी हमारी विदेश नीति का उद्देश्य माना गया है। भारत की अब तक की विदेश नीति इसी चौखट में विकसित हुई है।

भारतीय विदेश नीति के कुछ और उद्देश्य निम्नानुसार :

- पड़ोसी देशों के साथ एवं अन्य देशों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध निभाते समय अपने देश की सुरक्षा बाधित न हो; इसकी सावधानी बरतना। राष्ट्र की भौगोलिक सीमारेखाएँ सुरक्षित रहें; इस विषय में कोई समझौता न करना।
- भारत की एकता तथा एकात्मता का संरक्षण करना।
- दूसरे देशों में निवास करने वाले हमारे नागरिकों के हितों की रक्षा करना; इस जिम्मेदारी को संबंधित देशों के भारतीय दूतावास निभाते हैं।
- भारत के आर्थिक विकास के लिए विदेशों के साथ आर्थिक और व्यापारिक संबंध स्थापित करना।

भारत की विदेश नीति की समीक्षा : भारत की विदेश नीति की समीक्षा हम दो चरणों में करेंगे। पहला चरण स्वतंत्रता से लेकर वर्ष १९९० तक का माना जा सकेगा। दूसरा चरण वर्ष १९९० के बाद से आज तक का होगा।

भारत की विदेश नीति : आरंभिक चरण

पं. नेहरू ने आरंभिक समय में भारत की विदेश नीति का प्रारूप तैयार किया। भारत की विदेश नीति के द्वारा उन्होंने उपनिवेशवाद का विरोध किया। अंतरराष्ट्रीयवादी भूमिका लेकर वैश्विक शांति तथा सुरक्षा को प्रधानता दी। इस समय की भारत की विदेश नीति पर तीन बातों का प्रभाव था। (१) सभी अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों का आकलन किसी भी सत्ता के दबाव बिना, स्वतंत्र रूप से करने का प्रयत्न किया। शांति बनाए रखना हमेशा ही भारतीय विदेश नीति की विशेषता रही है।

(२) पाकिस्तान और चीन इन देशों की ओर से उत्पन्न होने वाले खतरों पर भी विचार किया गया।

(३) आत्मनिर्भरता का आग्रह और उसपर होने वाला विदेश नीति का बल; यह भी तत्कालीन विदेश नीति का वैशिष्ट्य था।

आरंभिक काल में भारत ने अपनी विदेश नीति के द्वारा एशिया महाद्वीप के देशों के साथ संबंध सुधारने के प्रयास किए। एशियाई राष्ट्रों के सहयोग से विकास साध्य करने और अपनी स्वतंत्रता को अबाधित रखने का प्रयत्न इस कालखंड में हुआ। प्रादेशिक या क्षेत्रीय विकास की यह कल्पना आगे अफ्रीका तक विस्तारित हुई, परंतु कुछ अफ्रो-एशियाई देश अमेरिका और सोवियत के शीतयुद्धकालीन सैन्य संगठनों के सदस्य हो गए। इस कारण प्रादेशिक विकास की प्रक्रिया रुक गई। इसके बाद जो देश शीतयुद्ध के सैन्य संगठनों में सम्मिलित नहीं हुए उन्होंने गुटनिरपेक्षतावाद नीति को समर्थन दिया। शांति और स्वतंत्रता ये दो सिद्धांत गुटनिरपेक्षतावादी नीति के मूलभूत सिद्धांत बन गए।

इस कालखंड में भारत को पड़ोसी राष्ट्रों के साथ हुए संघर्ष का सामना करना पड़ा। भारत और पाकिस्तान में कश्मीर समस्या को लेकर वर्ष १९४७-४८ और १९६५ में युद्ध हुए। वर्ष १९७१ में तीसरे युद्ध के कारण पाकिस्तान से अलग होकर स्वतंत्र बांगला देश का निर्माण हुआ।

१९७० के दशक में भारत की विदेश नीति में एक प्रकार की स्थिरता थी। दक्षिण एशिया में एक प्रबल प्रादेशिक सत्ता के रूप में भारत का उदय हुआ था। वर्ष १९७४ में भारत ने परमाणु परीक्षण कर परमाणु अनुसंधान क्षेत्र में अपनी क्षमता सिद्ध की लेकिन वर्ष १९८० से कुछ परिवर्तनों की शुरुआत हुई। दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में आपसी सहयोग बढ़ाने की दृष्टि से सार्क संगठन की स्थापना की गई। चीन के साथ संबंध सुधारने हेतु भारत ने बातचीत आरंभ की। रक्षा विभाग के सहयोग के लिए अमेरिका के साथ भारत ने लेन-देन की शुरुआत की।

पहला चरण : ई.स. १९४७ से १९९०

* शीतयुद्ध की पृष्ठभूमि में भारत ने गुटनिरपेक्षतावाद को स्वीकार किया। इस कारण सभी राष्ट्रों से मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखना, विकास के लिए विविध राष्ट्रों से उचित सहायता लेना, इसे तत्कालीन समय में प्रधानता प्राप्त थी। गुटनिरपेक्षतावाद नीति के कारण भारत को अपने विकास के लिए दोनों महासत्ताओं से सहायता प्राप्त करना संभव हुआ।

भारत की विदेश नीति में पंडित नेहरू का योगदान :

- वैश्विक या अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों का हम स्वतंत्र रूप से आकलन करें यही उनकी भूमिका थी।
- उन्होंने शांति नीति का समर्थन किया।

* इस कालखंड में सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने पर बल दिया गया था। इसके लिए तकनीकी विज्ञान को आयात किया गया। इसके लिए सोवियत रशिया, फ्रांस और जर्मनी आदि देशों ने भारत की सहायता की।

इस कालखंड में भारत को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उनमें पाकिस्तान के साथ संघर्ष और बांगलादेश का निर्माण तथा चीन के साथ संघर्ष का समावेश था।

दूसरा चरण : वर्ष १९९१ से आज तक

* भारत के दूसरे चरण की विदेश नीति अधिक व्यापक और गतिशील बनी। शीतयुद्धोत्तर काल में राजनैतिक और सैनिकी संबंधों की प्रधानता नहीं रही। विदेश नीति में आर्थिक मामले, व्यापार, शिक्षा और तकनीकी ज्ञान जैसे अनेक पहलुओं का समावेश हुआ। वर्ष १९९१ के बाद भारत ने आर्थिक व्यवस्था पर लदा सरकारी नियंत्रण कम कर आर्थिक उदारीकरण नीति स्वीकार की। इस कारण सुलभता से पड़ोसी देशों के साथ व्यापार में वृद्धि हुई। वैश्विक व्यापार में हमारी सहभागिता बढ़ गई। आर्थिक विकास की दर वृद्धि के प्रयास होने लगे।

क्या आप खोज सकेंगे ?

* आर्थिक विकास दर से क्या तात्पर्य है?
* भारत, नेपाल, भूटान आर्थिक विकास दर की तालिका तैयार कीजिए।

* वर्ष १९९० के बाद के दशक में दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों के साथ अर्थात सिंगापुर, थाइलैंड, विएतनाम आदि राष्ट्रों के साथ हमारे आर्थिक संबंध अधिक मजबूत हो गए। इजराइल, जापान, चीन, यूरोपीय संघ के साथ हमारा लेन-देन अधिक बढ़ गया।

* अंतरराष्ट्रीय और प्रादेशिक स्तर पर अनेक आर्थिक संगठनों में भारत का सहभाग बढ़ गया, जैसे जी-२० तथा BRICS (Brazil, Russia, India, China, South Africa)।

ब्रिक्स – बोध चिह्न

करके देखिए ।

भारत और अमेरिका में अनेक बातों में समानता है। जैसे-दोनों देशों में लोकतंत्र है। ऐसी ही समानता दिखाने वाली अन्य बातें खोजें और उसपर एक प्रकल्प तैयार कीजिए।

* अमेरिका के साथ हमारे संबंध अधिक दृढ़ हुए हैं। एक-दूसरे के प्रति विश्वास बढ़ा है। अंतरराष्ट्रीय समूह में भारत का स्थान ऊँचा उठा है।
* भारत की परमाणु नीति भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण भाग है। परमाणु शक्ति का अर्थ और उसके उपयोग इसका अध्ययन आपने इतिहास, भूगोल अथवा रसायन विज्ञान विषयों में किया होगा। परमाणुशक्ति का महत्त्व ध्यान में रखते हुए भारत ने स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद ही परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की नींव रखी। इसके लिए परमाणु ऊर्जा विभाग और परमाणु आयोग स्थापित किया गया। परमाणु ऊर्जा आयोग के प्रथम अध्यक्ष डॉ. होमी भाभा

क्या आप जानते हैं?

परमाणु हथियार अत्यंत विनाशकारी होते हैं। इसलिए उनका उपयोग कभी न हो इसके लिए निरंतर प्रयत्न करना आवश्यक होता है। परमाणु हथियारों का प्रसार रोकने के लिए प्रमुख रूप से दो समझौते किए गए। (१) परमाणु प्रसार प्रतिबंध समझौता (NPT) (२) सभी प्रकार के परमाणु परीक्षणों का प्रतिबंध समझौता (CTBT)। इन दोनों समझौतों की शर्तें केवल बड़े देशों के लिए ही लाभकारी होने के कारण तथा विकासशील देशों पर कठोर प्रतिबंध लगाने वाली होने के कारण इस समझौते पर भारत ने हस्ताक्षर नहीं किए।

करके देखिए ।

परमाणु हथियारों का निर्माण करने वाले देशों की संख्या अधिक से अधिक हो रही है। परमाणु का प्रसार रोकने हेतु आपकी कक्षा की ओर से एक निवेदन तैयार कीजिए। समाचारपत्र में उसे प्रकाशित करने के लिए प्रयत्न कीजिए।

थे। ऊर्जा का निर्माण उसका मुख्य उद्देश्य था, फिर भी सैन्य क्षमता निर्माण करना भी एक उद्देश्य था। इसके अनुसार वर्ष १९७४ में भारत ने पोखरण में पहला परमाणु परीक्षण किया। वर्ष १९९८ में दूसरा परमाणु परीक्षण कर भारत ने परमाणु हथियार का निर्माण किया है। परमाणु हथियारों का वहन करने वाले प्रक्षेपणास्त्र भी हमने तैयार किए हैं तथा इसके लिए वायु सेना और नौसेना भी सक्षम किए गए हैं।

अब भारत एक परमाणु अस्त्रधारी राष्ट्र है; परंतु हमने एक जिम्मेदार परमाणु अस्त्रधारी राष्ट्र की भूमिका स्वीकार की है। निरस्त्रीकरण के प्रयत्नों को भारत हमेशा समर्थन दे रहा है। क्योंकि विश्व में शांति और सुरक्षा स्थापित रहें; यही भारत की भूमिका है।

विदेश नीति की इस प्रकार समीक्षा करने के बाद हम अगले अध्याय में भारत की सुरक्षा व्यवस्था का अध्ययन करेंगे।

स्वाध्याय

१. दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए।

(१) परमाणु ऊर्जा आयोग स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य ..... था।
- (अ) सैन्य क्षमता निर्माण करना
- (ब) परमाणु परीक्षण करना
- (क) परमाणु प्रसार रोकना
- (ड) ऊर्जा की निर्मिति

(२) विश्व के सभी राष्ट्रों का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य ..... बना है।
- (अ) आण्विक विकास (ब) आर्थिक विकास
- (क) परमाणु परीक्षण (ड) सुरक्षा व्यवस्था

(३) भारत की विदेश नीति में प्रमुख रूप से निम्नलिखित बात महत्त्वपूर्ण है।
- (अ) आर्थिक उदारीकरण नीति
- (ब) परस्परावलंबन
- (क) गुटनिरपेक्षतावाद
- (ड) आण्विक विकास

(४) वर्ष १९७४ में भारत ने ..... में परमाणु परीक्षण किया।
- (अ) श्रीहरिकोटा (ब) थुंबा
- (क) पोखरण (ड) जैतापुर

२. निम्नलिखित कथन सत्य हैं या असत्य कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

(१) पं. नेहरू ने भारत-चीन संबंध सुधारने में बड़ा योगदान दिया।

(२) अटलबिहारी वाजपेयी ने पाकिस्तान के साथ संबंध सुधारने में अगुवाई की।

३. निम्नलिखित अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

(१) भारत की विदेश नीति

(२) राष्ट्रीय हित संबंध

(३) वैश्विक शांति

४. परमाणु शस्त्रों की संपन्नता के कारण वैश्विक शांति के लिए खतरा निर्माण हो गया है। इस संबंध में आपको क्या लगता है?

५. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए।

(१) भारत की विदेश नीति किन मूल्यों पर आधारित है?

(२) भारत-चीन संबंध सुधारने के लिए किस-किस ने योगदान दिया?

(३) भारत की विदेश नीति के उद्देश्य लिखिए।

६. निम्न अवधारणा चित्र तैयार कीजिए।

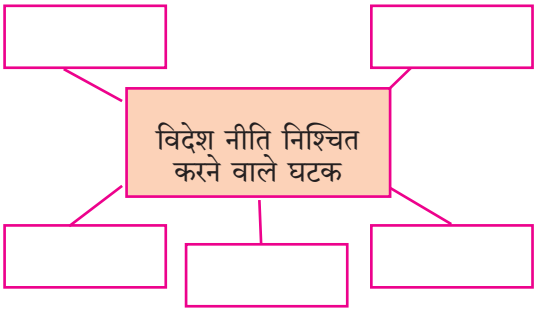

उपक्रम

प्राचीन काल में भारत के किन-किन देशों के साथ व्यापारिक संबंध थे, इसकी जानकारी प्राप्त कीजिए।

7I52UJ